हिन्दी

(www.tiwariacademy.com)
(वसंत)(पाठ 20)(बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन' – विप्लव–गायन)
(कक्षा 7)

प्रश्न अभ्यास

कविता से

प्रश्न 1:

'कण–कण में है व्याप्त वही स्वर ... कालकूट फणि की चिंतामणि' ।

क:

'वही स्वर', 'वह ध्वनि' एवं 'वही तान' आदि वाक्यांश किसके लिए/किस भाव के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

क:

'वही स्वर' , 'वह ध्वनि' एवं 'वही तान' आदि वाक्यांश के द्वारा जनता में नव–निर्माण की भावना को जगाने और उनके अंदर क्रोति की चिंगारी को जागृत करने के लिए किए गए है ।

ख:

'वही स्वर' , 'वह ध्वनि' एवं 'वही तान' से संबंधित भाव है उसका 'रुद्ध–गीत की कुद्ध– तान है। निकली मेरी अंतरतर से' – पंक्तियों से क्या कोई संबंध बनता है ।

ख:

कवि के हृदय में वर्तमान व्यवस्था के प्रति जो रोष है वह निकल कर सामने आया है । और यही गीत सजाज के कण–कण में समाकर प्रतिध्वनि सा लगता है ।

प्रश्न 2:

नीचे दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए ।
'सावधान! मेरी वीणा में...दोनों मेरी ऐंठी है' ।

उत्तर 2:

कवि की वीणा से जब क्रांति के गीत निकलते हैं तो उसमें से चिंगारी निकलने लगती है और क्रोध के कारण उसकी उंगलियां ऐंठ जाती हैं । इस प्रकार वह क्रांति का क्रूर संदेश समाज को दे रहा है ।